सोयाबीन की खेती

प्रजातियाँ

क्र. सं	प्रजातियां	पकने की अवधि	उपज (कु./ हे.)
1.	पी.के.- 472	120-125	30-35
2.	पी.के.- 262	120-125	28-30
3.	पी.के. - 416	115-120	30-35
4.	जे.एस. 71-5	100-105	25-28
5.	पी.एस. - 564	115-120	25-30

क्र. सं	प्रजातियां	पकने की अवधि	उपज (कु./ हे.)
1.	जे.एस. - 2	98-105	25-30
2.	जे.एस.-93-5	102-108	25-30
3.	जे.एस. 72-44	105-110	20-28
4.	पूसा - 20	110-115	30-32
5.	पूसा - 16	110-115	25-35
6.	एम.ए.यू.एस. - 47	85-90	25-30

खेत की तैयारी

- दोमट भूमि सर्वोत्तम होती है
- बुंदेलखंड की सभी प्रकार की भूमि में इसकी खेती की जा सकती है

बीज की मात्रा एवं बुवाई

- 75-80 किलोग्राम बीज एक हेक्टेयर के लिए पर्याप्त
- बीज का अंकुरण 75-80 प्रतिशत से कम नहीं होना चाहिए

- 1 किलोग्राम बीज को 2 ग्राम थीरम एवं 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम 50% घुलनशील चूर्ण के मिश्रण से बीजशोधन
- सोयाबीन के विशिष्ट राईजोबियम कल्चर से बीज को शोधित करना चाहिए

- बुवाई का उपयुक्त समय 20 जून से 10 जुलाई तक
- लाइन से लाइन की दूरी 45 सेंटीमीटर तथा पौधे से पौधे की दूरी 3-5 सेंटीमीटर एवं बीज को 3-4 सेंटीमीटर की गहराई पर बोना चाहिए

खाद एवं उर्वरक

- उर्वरको का प्रयोग मृदा परीक्षण की संस्तुतियों के आधार पर करना चाहिए
  - 20 किलोग्राम नत्रजन
  - 80 किलोग्राम फास्फोरस
  - 40 किलोग्राम पोटाश / हेक्टेयर

- उर्वरको की पूरी मात्रा अंतिम जुताई 6-7 सेंटीमीटर गहराई पर
- आख़िरी जुताई में 50-60 कुंतल सड़ी गोबर की खाद
- 150-200 किलोग्राम जिप्सम का प्रयोग प्रति हेक्टर की दर से लाभदायक

सिचाई

- फूल एवं फलियों में दाना भरते समय यदि खेत में नमी की कमी हो तो एक या दो हल्की सिंचाई लाभदायक
- जल निकास का उचित प्रबंध

खरपतवार नियंत्रण

- खेत खरपतवारो से मुक्त रखना चाहिए
- पहली निराई-गुड़ाई बुवाई के 25 दिन बाद, दूसरी 45 दिन बाद
- बुवाई के 24 घंटे पहले फ्लूक्लोरेलिन 45 ई.सी. की 2.25 लीटर प्रति हेक्टेयर

रोग नियंत्रण

- चारकोल राट
- ऐन्थ्रेक्नोज
- पीला चित्रवर्ण रोग
- सूत्रकृमि

चारकोल राट

- फफूंदजनित रोग
- पौधे की जड़े सड़ कर सूख जाती है
- तने का जमीन से ऊपरी हिस्सा लाल भूरे रंग का हो जाता है
- पत्तियां पीली पड़ कर, पौधे मुरझा जाते है

नियंत्रण

- रोग सहनशील किस्मो की बुवाई करनी चाहिए
- 1.5 ग्राम थीरम एवं 1.5 ग्राम कार्बेन्डाजिम से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करके बुवाई करनी चाहिए

ऐन्थ्रेक्नोज

- फूल आने की अवस्था में तने, पर्णवृन्त व फली पर लाल से गहरे भूरे रंग के अनियमित आकार के धब्बे दिखाई देते है

नियंत्रण

- रोग सहनशील किस्मो की बुवाई करनी चाहिए
- 1.5 ग्राम थीरम एवं 1.5 ग्राम कार्बेन्डाजिम से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करके बुवाई करनी चाहिए।

- रोग का लक्षण दिखाई देने पर जिनेब या मैन्कोजेब 2 ग्रा./ली. की दर से छिड़काव

पीला चित्रवर्ण रोग

- रोगरोधी प्रजातियों की बुवाई करनी चाहिए

रोकथाम

- मिथाइल ओ डिमेटान 25 ई.सी. अथवा डाइमेथोएट 30 ई.सी. की 1 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव

कीट नियंत्रण

- फली छेदक कीट
- ग्रीन सेमी लूप कीट
- बिहार रोमिल सूंडी
- गार्डन बीटल

फली छेदक कीट

- सूंडियां फलियों को खाकर नुकसान पहुचती है

नियंत्रण

- क्लोरपायरीफॉस 20 ई.सी. की 1.5 लीटर या क्यूनॉलफॉस 25 ई.सी. की 1.5 लीटर प्रति हेक्टेयर छिड़काव

ग्रीन सेमी लूप

- सूंडियां शीघ्र पकने वाली प्रजातियों में फूल निकलते समय उसकी कलियों को खा जाती है
- प्रथम फूल के समाप्त होने पर दुबारा पुष्प बनते है, जिनमे फलियां बनने पर उनमे दाने नहीं बनते है

नियंत्रण

- क्यूनॉलफॉस 25 ई. सी. की 1.5 लीटर मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव

बिहार रोमिल सूंडी

- प्रारंभिक अवस्था में सूंडियां एकत्र होकर पत्तियों की सतह पर रहकर क्लोरोफिल को खुरचकर खाती है
- बाद में पूरे खेत में बिखरकर पत्तियों को खाकर पौधों को पत्ती रहित कर देती है

नियंत्रण

- प्रारंभिक अवस्था में जब गिडारे झुण्ड में पत्तियों पर दिखाई दे तो ग्रसित पत्ती को तोड़कर नष्ट कर देना चाहिए
- क्यूनॉलफॉस 25 ई. सी. की 1.5 लीटर मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव

गर्डिल बिटिल

- गिडारे तने अथवा टहनियों को अंदर ही अंदर खाती है जिससे पौधा सूख जाता है

नियंत्रण

- क्यूनॉलफॉस 25 ई. सी. की 1.5 लीटर मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव

कटाई एवं उपज

- फलियों में हरापन पूर्णतया समाप्त होने पर कटाई करनी चाहिए
- कटाई के समय बीजो में उपयुक्त नमी की मात्रा 14 -16 % होनी चाहिए
- 2-3 दिन तक धूप में सुखाकर थ्रेशर से धीमी गति पर मड़ाई करनी चाहिए

- मड़ाई के बाद बीज को 3-4 दिन तक धूप मे अच्छी तरह से सुखाकर भण्डारण करना चाहिए
- पैदावार 25-30 कुंतल प्रति हेक्टेयर